Sub- History of Indian Sculpture (2002T)

पुरी का जगन्नाथ मन्दिर

11वीं शती में निर्मित यह मं० श्री लिंगराज के समान बृहद आकार में हैं। और दोहरी दीवारों वाले आंगन के मध्य में स्थित है। चारों दिशाओं में चार विशाल द्वार हैं। मुख्य द्वार पूर्व की ओर है। इसके सामने अरुण स्तम्भ है। जो पहले कोणार्क के सूर्य मन्दिर में था इसमें आगे के दो मण्डप 14वीं शती के बने हैं।

इस मन्दिर में बौद्ध धर्म के त्रिरत्न की परम्परा में ही जगन्नाथ, सुभद्रा और बलराम की मूर्तियां (जो लोकशैली में बनायी जाती हैं) स्थापित हैं। इसके अतिरिक्त शिव-पार्वती, विष्णु लक्ष्मी तथा ब्रह्मा सावित्री को पुरुष व प्रकृति के रूप में कल्पित किया गया है।

उड़ीसा के उक्त मन्दिरों में से एक दो को छोड़कर शेष सभी मन्दिर शैव मत से सम्बंधित हैं। शैली की दृष्टि से आकृतियों में भारी पन तथा दिखाता है। प्राय: सभी स्थानों पर नाग कन्याओं संगीत बालाओं और नायिका भेद की सुन्दर मूर्तियां बनी हैं। कुछ मूर्तियां मातृत्व व्यंजक भी हैं। अधिकांश स्त्री-पुरुषों की नग्न मूर्तियां अश्लीलता से पूर्ण हैं। उड़ीसा के कला कारों ने नटराज शिव का भी अंकन किया है।

दाक्षिणी भारत की मूर्तिकला (धातु प्रतिमाएं)

Scanned with CamScanner

की मूर्ति पूर्ण सावधानी तथा सफाई से बना ली जाती है। इसके
ऊपर उत्तम प्रकार की चिकनी मिट्टी की मोटी परत लगा दी
जाती है। सूख जाने पर इसे गरम करते हैं। जिससे नीचे की
और मिट्टी के बने एक छिद्र से मूर्ति का सारा मोम गलकर
बाहर निकल आता है। और मिट्टी का एक पोला साँचा
तैयार हो जाता है। इस साँचे में पिघली हुई धातु भर देते हैं।
ठंडी हो जाने पर साँचे की मिट्टी को तोड़ देते हैं। जिससे अन्दर
से एक ठोस धातु मूर्ति निकल आती है। जितनी संख्या में धातु
की मूर्तियां बनानी हो उतनी ही संख्या में मोम की मूर्तियाँ बनायी
जाती हैं। धातु की मूर्ति को आवश्यकतानुसार साफ तथा चिकना
किया जाता है। और कहीं-2 कटाई या छिलाई भी की जाती है।
इस प्रकार एक सुन्दर तथा ठोस धातु प्रतिमा तैयार हो
जाती है ऐसी मूर्तियों में मोम की द्रवणशीलता, कोमलता
एवं मसृणता आदि के गुण भी आ जाते हैं। मूर्तियों का आकार
अंगों के अनुपात मुद्रायें तथा भाव भंगिमायें सभी शास्त्रीय
नियमों तथा परम्परा के अनुसार निर्धारित किये जाते हैं।

"The Subject was first Modelled in Wax and Model Coated with clay. After the Wax Matted out, the liquid Metel poured into the mould, this was the teachique - employed in making all the beautiful Solid images of bronze or brass.

Sd/-
डॉ० पूर्णिमा वाशिष्ठ